पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

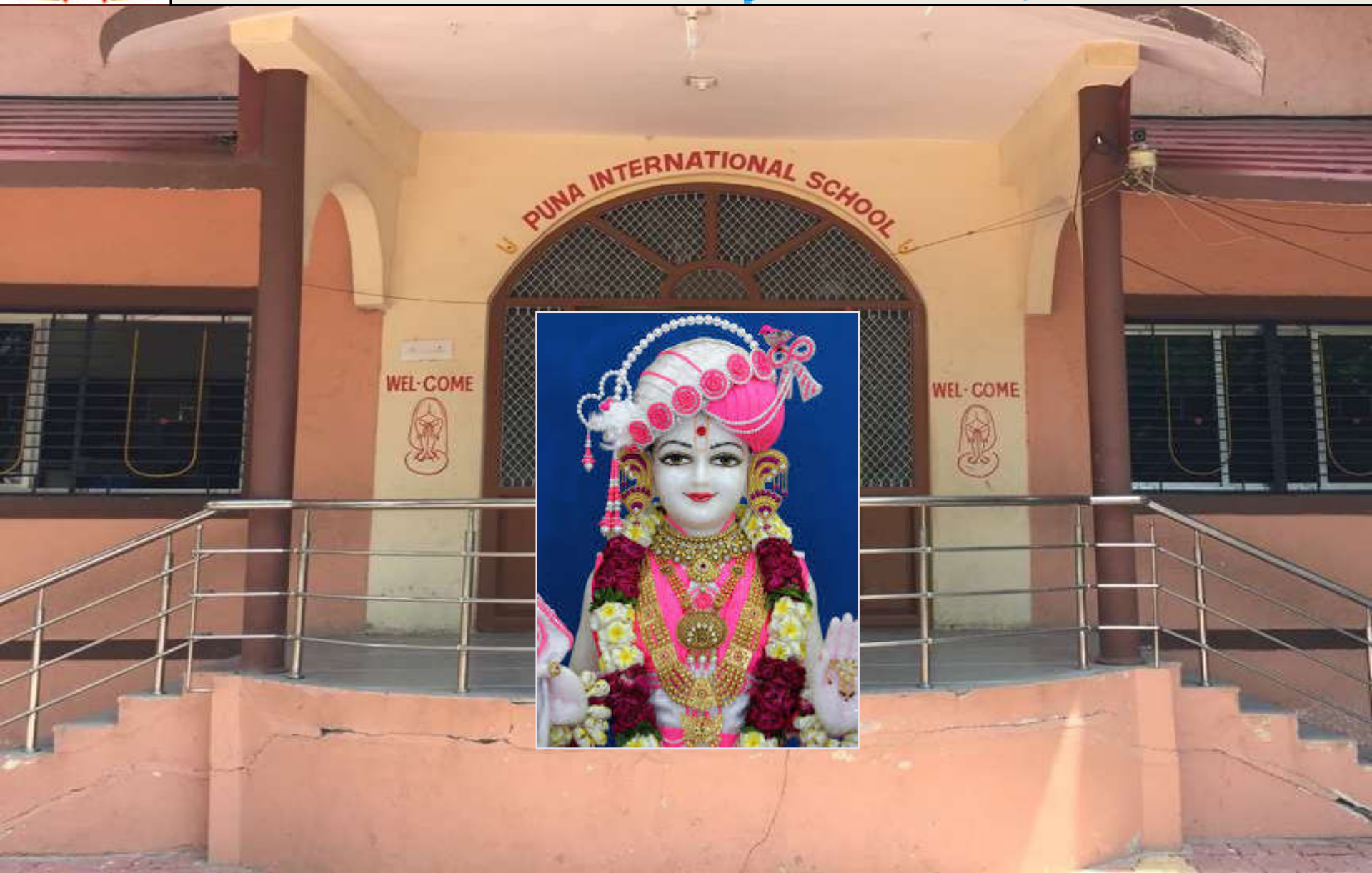

पाठ–2 कक्षा–10

डायरी का पन्ना

सीताराम सेकसरिया

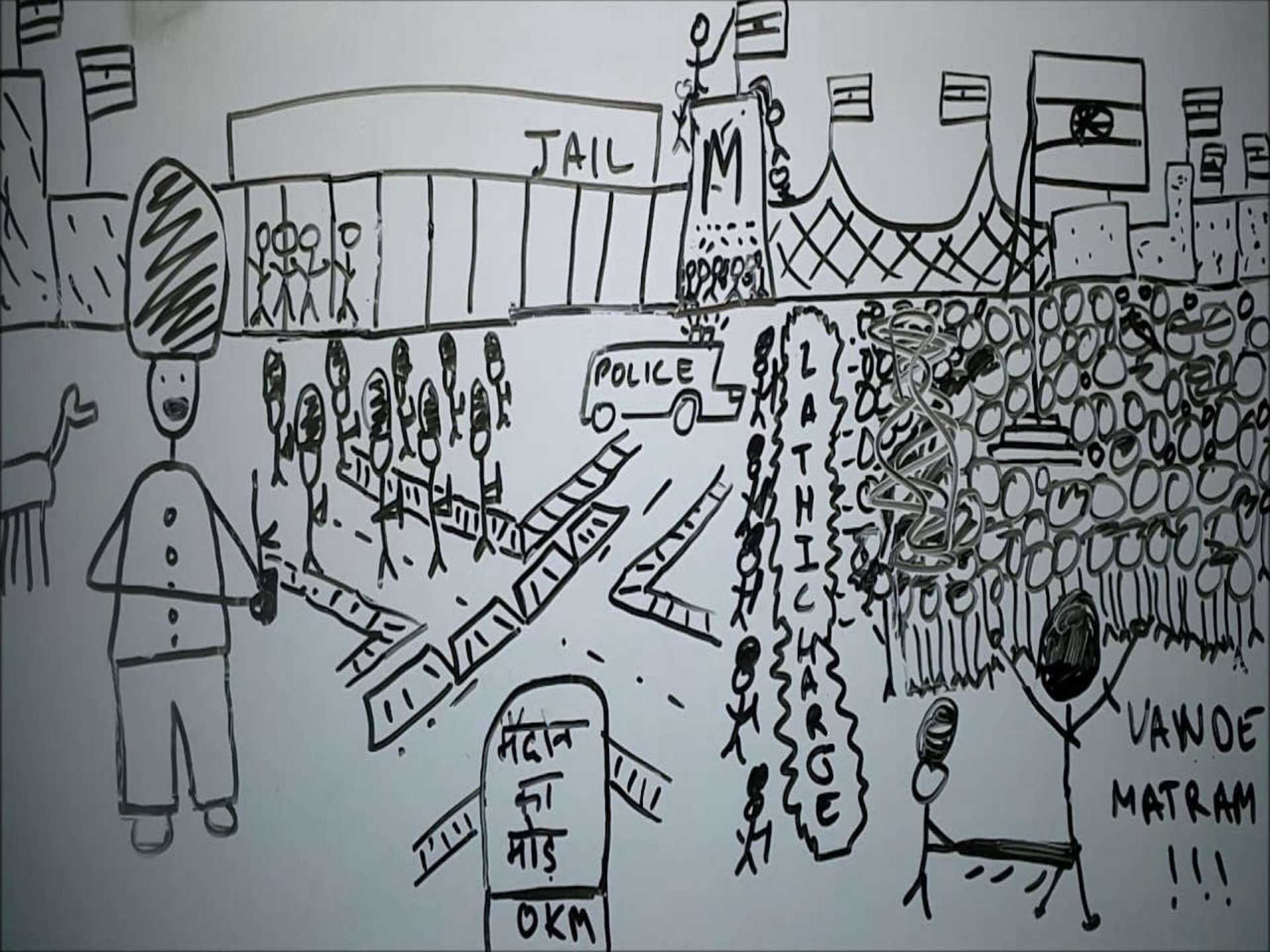
JAIL
POLICE
LATHI CHARGE
मैदान का मोड़
0KM
VANDE MATRAM !!!

leqk ka pircy

- डायरी का एक पन्ना सीताराम सेकसरिया द्वारा लिखित एक संस्मरण है, जो हमें 1930-31 के आस पास हो रही राजनीतिक हलचल के बारे में बताता है. इसमें एक दिन की घटनाओं का वर्णन है, जब बंगाल के लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए अपूर्व जोश दिखाया था. इससे पहले हमेशा यह समझा जाता था कि वहा के लोग आज़ादी की लड़ाई लड़ने के इच्छुक नहीं हैं, लेकिन २६ जनवरी 1931 को घटी इन घटनाओं द्वारा उन्होंने दिखा दिया कि वे भी किसी से कम नहीं हैं. पुलिस की बर्बरता और कठोरता के बाड़ भी हज़ारों लोगों ने स्वाधीनता मार्च में हिस्सा लिया , ज़िनमें औरतें भी बड़ी संख्या में शामिल थीं. उन्होंने लाठियां खायीं, खून बहाया लेकिन फिर भी वे पीछे नहीं हटे और अपना काम करते रहे. एक, डॉक्टर, जो घायलों की देखभाल कर रहा था , उसने उनके इलाज के साथ-साथ उनके फोटो भी लिए ताकि उन्हें अख़बारों में छपवा कर इस घटना को पूरे देश तक पहुँचाया जा सके. साथ ही ब्रिटिश सरकार कीं क्रूरता को भी दुनिया को दिखाया जा सके.

pa# ka sar

'डायरी का एक पन्ना' पाठ में लेखक सीताराम सेकसरिया ने 26 जनवरी 1931 का वर्णन किया है। 26 जनवरी 1931 को गुलाम भारतवर्ष में दूसरा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। कलकत्तावासियों ने आज़ादी के इस जश्न में बढ़-चढ़कर भाग लिया। बड़े बाज़ार के प्रायः सभी मकानों पर झंडे फहर रहे थे। पूरे कलकत्ता की रौनक देखते ही बनती थी। जिस रास्ते पर मनुष्य जाते थे उसी रास्ते में उत्साह एवं नवीनता मालूम होती थी। दूसरी तरफ़ अंग्रेज सरकार भी इस आंदोलन को विफल करने में पूरी ताकत से जुटी हुई थी। इस आंदोलन की सफलता सरकार की विफलता थी अतः पुलिस की तरफ़ से भी कड़े सुरक्षा प्रबंध किए गए थे। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था। आंदोलन ज्यों-ज्यों उग्र होता जा रहा था त्यों-त्यों पुलिस का दमन चक्र भयंकर रूप लेता जा रहा था। पुलिस ने जुलूस पर लाठी चार्ज किया। इस लाठी चार्ज में अनेक लोग घायल हुए। क्षितीश चटर्जी का सिर फट गया। वृजलाल गोयनका को एक अंग्रेज़ घुड़सवार ने लाठी से मारा और पकड़ कर दूर तक घसीटा। स्त्री कार्यकर्त्ताओं पर भी जमकर लाठी चार्ज किया गया। अंग्रेजों के इस अत्याचार के चलते 160 से भी अधिक आदमी बुरी तरह से घायल हो गए थे। लगभग 105 स्त्रियों को लाल बाज़ार लॉकअप में ले जाया गया। पर कलकत्तावासियों ने अंग्रेज़ों के इस अत्याचार का मुँह तोड़ जवाब दिया। पुलिस द्वारा निर्ममता से लाठी चार्ज करने पर भी विभिन्न पार्कों एवं मोनुमेंट पर भारी तादाद में पहुँचकर; झंडा फहराकर तथा शपथ-पत्र पढ़कर कलकत्तावासियों ने यह सिद्ध कर दिया कि अब वे सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों से नहीं डरते।

pXn0T t r:-

1-जनवरी १९३९ को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई थी?

1-२६ जनवरी १९३९ को अमर बनाने के लिए मुख्य कार्यकर्ताओं ने अधिक से अधिक लोगों को जुटाने की पूरी तैयारी की थी। इसके साथ ही जन-जन तक आजादी की भावना को पहुँचाने की कोशिश की थी। हर गली और हर मोहल्ले में जबरदस्त सजावट की गई थी। हर तरफ का माहौल जोश से भरा हुआ लगता था।

‘2-आज जो बात थी वह निराली थी’ किस बात से पता चल रहा है कि आज का दिन निराला था? स्पष्ट कीजिए।

2-लोगों की तैयारी और उनका जोश देखते ही बनता था। एक तरफ पुलिस की पूरी कोशिश थी कि स्थिति उनके काबू में रहे, तो दूसरी ओर लोगों का जुनून पुलिस की कोशिश के आगे भारी पड़ रहा था। हर पार्क तथा मैदान में भारी संख्या में लोग इकट्ठा हुए थे। जोश भरा माहौल बता रहा था कि वह दिन वाकई निराला था।

3-पुलिस कमिश्नर के नोटिस और काउंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

3-पुलिस कमिश्नर की नोटिस सभा और आजादी के जश्न को रोकने के लिए थी। दूसरी तरफ काउंसिल की नोटिस लोगों का आह्वान कर रही थी कि वे भारी संख्या में आकर आजादी का उत्सव मनाएँ। दोनों नोटिस एक दूसरे के विरोधाभाषी थे।

4-धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

4-धर्मतल्ले के मोड़ पर पुलिस ने कुछ लोगों को पकड़ लिया तथा लाठी भी चलाई। कुछ लोग आगे बढ़ने में कामयाब हो गये। इस तरह वहाँ पर आकर जुलूस टूट गया।

5-डॉ. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देखभाल तो कर ही रहे थे, उनकी फोटो भी उतरवा रहे थी। फोटो उतारने की क्या वजह हो सकती है?

5-फोटो उतरवाने का एक ही मकसद हो सकता है। प्रेस में घायलों की फोटो जाने से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के स्वाधीनता संग्राम को प्रचार मिल सकता था। इसके साथ ही सरकार द्वारा अपनाई गई बर्बरता को भी दिखाया जा सकता था।

6-सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

6- सुभाष बाबू के जुलूस में सुभाष बाबू को तो शुरु में ही पकड़ लिया गया था। उसके बाद स्त्रियों ने पूरी तरह से जुलूस को आगे बढ़ाने का जिम्मा ले लिया था। धर्मतल्ले के मोड़ पर ५० – ६० स्त्रियों ने धरना दे दिया। आखिर में करीब १०५ स्त्रियाँ पकड़ी गईं। जिस तरह से स्त्रियों ने जुलूस के तितर बितर होने के बाद भी मामले को आगे बढ़ाया उससे साफ जाहिर होता है कि स्त्रियों ने बखूबी उस दिन अपना योगदान दिया था।

7-बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉक-अप में रखा गया, बहुत सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपाके विचार में ये सब अपूर्व क्यों है?

7-जैसा कि आखिरी पारा में वर्णन किया गया है, इसके पहले कलकत्ता में इतने बड़े पैमाने पर आजादी की लड़ाई में लोगों ने शिरकत नहीं की थी। उस दिन जनसमूह का बड़ा सैलाब कलकत्ता की बुरी छवि को कुछ हद तक धोने में कामयाब होता दिख रहा था। इसलिए लेखक को वह दिन अपूर्व लग रहा था।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए:

1-आज जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक थी कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया।

1- उस सभा के पहले कलकत्ता में पहले कभी लोगों ने इतना बढ़ चढ़ कर स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा नहि लिया था। इस कारण से कुछ लोग हमेशा कलकत्ता पर यह आरोप लगाते थे कि वहाँ के लोग गुलामी को ही पसंद करते हैं। लेकिन उस दिन जो कुछ हुआ उससे कलकत्ता के नाम पर लगा दाग धुलने में बहुत सहायता मिली होगी।

2-खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

2- पुलिस और प्रशासन के मना करने के बावजूद लोगों ने उस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। नौकरी जाने की परवाह किये बिना कई सरकारी मुलाजिमों ने भी अपनी शिरकत की इसलिए कहा गया है कि खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

संधि

संधि शब्द का अर्थ है 'मेल'। दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है वह संधि कहलाता है। जैसे - सम् + तोष = संतोष ; देव + इंद्र = देवेंद्र ; भानु + उदय = भानूदय।

➡ संधि के भेद

संधि तीन प्रकार की होती हैं – 1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

स्वर संधि

- ❖दीर्घ संधि
- ❖यण संधि
- ❖गुण संधि
- ❖वृद्धि संधि
- ❖अयादी संधि

1. दीर्घ संधि

सूत्र-अक: सवर्णे दीर्घ: अर्थात् अक् प्रत्याहार के बाद उसका सवर्ण आये तो दोनो मिलकर दीर्घ बन जाते हैं। ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई और ऊ हो जाते हैं। जैसे -

(क) अ/आ + अ/आ = आ

अ + अ = आ --> धर्म + अर्थ = धर्मार्थ / अ + आ = आ --> हिम + आलय = हिमालय

आ + अ = आ --> विद्या + अर्थी = विद्यार्थी / आ + आ = आ --> विद्या + आलय = विद्यालय

2. गुण संधि

इसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए ; उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं। जैसे -

(क) अ + इ = ए ; नर + इंद्र = नरेंद्र

अ + ई = ए ; नर + ईश = नरेश

आ + इ = ए ; महा + इंद्र = महेंद्र

(ख) अ + उ = ओ ; ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश ;

आ + उ = ओ महा + उत्सव = महोत्सव

अ + ऊ = ओ जल + ऊर्मि = जलोर्मि ;

(ग) अ + ऋ = अर् देव + ऋषि = देवर्षि

(घ) आ + ऋ = अर् महा + ऋषि = महर्षि

3. वृद्धि संधि

अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे -

(क) अ + ए = ऐ ; एक + एक = एकैक ;

अ + ऐ = ऐ मत + ऐक्य = मतैक्य

आ + ए = ऐ ; सदा + एव = सदैव

आ + ऐ = ऐ ; महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

(ख) अ + ओ = औ वन + औषधि = वनौषधि ; आ + ओ = औ महा + औषधि = महौषधि ;

अ + औ = औ परम + औषध = परमौषध ; आ + औ = औ महा + औषध = महौषध

4. यण संधि

(क) इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है।

(ख) उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है।

(ग) 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र्' हो जाता है। इन्हें यण-संधि कहते हैं।

इ + अ = य् + अ, यदि + अपि = यद्यपि

ई + आ = य् + आ ; इति + आदि = इत्यादि।

(घ) उ + अ = व् + अ ; अनु + अय = अन्वय

उ + आ = व् + आ ; सु + आगत = स्वागत

उ + ए = व् + ए; अनु + एषण = अन्वेषण

5. अयादि संधि

ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

(क) ए + अ = अय् + अ ; ने + अन = नयन

(ख) ऐ + अ = आय् + अ ; गै + अक = गायक

(ग) ओ + अ = अव् + अ ; पो + अन = पवन

(घ) औ + अ = आव् + अ ; पौ + अक = पावक

औ + इ = आव् + इ ; नौ + इक = नाविक

व्यंजन संधि की परिभाषा-Definition of Vyanjan Sandh

व्यंजन के बाद यदि किसी स्वर या व्यंजन के आने से उस व्यंजन में जो विकार / परिवर्तन उत्पन्न
व्यंजन संधि के प्रमुख नियम निम्न प्रकार से हैं।

नियम 1- किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण
क् को ग् च् को ज्, ट् को ड् और प् को ब् हो जाता है। जैसे -

दिक् + गज = दिग्गज (क् + ग = ग्ग)
वाक + ईश = वागीश (क् + ई = गी)
अच् + अंत = अजंत (च् + अ = ज्)
षट् + आनन = षडानन (ट् + आ = डा)

विसर्ग संधि की परिभाषा

जब संधि करते समय विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन वर्ण के आने से जो विकार उत्पन्न होता है, हम उसे विसर्ग संधि कहते हैं। **जैसे:**

विसर्ग संधि के उदाहरण :

- अंतः + करण : अन्तकरण
- अंतः + गत : अंतर्गत
- अंतः + ध्यान : अंतर्ध्यान
- अंतः + राष्ट्रीय : अंतर्राष्ट्रीय

- si2:-

अभय	+	अरण्य	=	अ	+	अ	=	आ	=	अभयारण्य
शरण	+	आगत	=	अ	+	आ	=	आ	=	शरणागत
विद्या	+	आलय	=	आ	+	आ	=	आ	=	विद्यालय
विद्या	+	अर्थी	=	आ	+	अ	=	आ	=	विद्यार्थी
कवि	+	इंद्र	=	इ	+	इ	=	ई	=	कवींद्र
हरि	+	ईश	=	इ	+	ई	=	ई	=	हरीश
मही	+	इंद्र	=	ई	+	इ	=	ई	=	महींद्र
सती	+	ईश	=	ई	+	ई	=	ई	=	सतीश
भानु	+	उदय	=	उ	+	उ	=	ऊ	=	भानूदय
सिंधु	+	ऊर्मि	=	उ	+	ऊ	=	ऊ	=	सिंधूर्मि
वधू	+	उत्सव	=	ऊ	+	उ	=	ऊ	=	वधूत्सव
भू	+	ऊर्जित	=	ऊ	+	ऊ	=	ऊ	=	भूर्जित
चरण	+	अमृत	=	अ	+	अ	=	आ	=	चरणामृत
गिरि	+	ईश	=	इ	+	ई	=	ई	=	गिरीश
नदी	+	ईश	=	ई	+	ई	=	ई	=	नदीश
मंजु	+	ऊषा	=	उ	+	ऊ	=	ऊ	=	मंजूषा
शिव	+	आलय	=	अ	+	आ	=	आ	=	शिवालय
पितृ	+	ऋण	=	ऋ	+	ऋ	=	ॠ	=	पितॄण
पृथ्वी	+	ईश	=	ई	+	ई	=	ई	=	पृथ्वीश

सन्धि शब्द	विच्छेद	सन्धि का नाम
सदुपाय	सत् + उपाय	(व्यंजन सन्धि)
पुनरुत्थान	पुनः + उत्थान	(विसर्ग सन्धि)
उन्मत्तता	उत् + मत्तता	(व्यंजन सन्धि)
दुर्बल	दुः + बल	(विसर्ग सन्धि)
स्वार्थी	स्व + अर्थी	(स्वर सन्धि)
त्रिलोकेश्वर	त्रिलोक + ईश्वर	(स्वर सन्धि)
अत्याचार	अति + आचार	(स्वर सन्धि)
परमात्मा	परम + आत्मा	(स्वर सन्धि)
महात्मा	महा + आत्मा	(स्वर सन्धि)
अभ्यस्त	अभि + अस्त	(स्वर सन्धि)
पीताभ	पीत + आभ	(स्वर सन्धि)
निश्चेष्ट	निः + चेष्ट	(विसर्ग सन्धि)
बहिष्कार	बहिः + कार	(विसर्ग सन्धि)
मरणासन्न	मरण + आसन्न	(स्वर सन्धि)
सम्भवतः	सम् + भवतः	(व्यंजन सन्धि)
वीरांगना	वीर + अंगना	(स्वर सन्धि)
नराधम	नर + अधम	(स्वर सन्धि)
निष्कंटक	निः + कंटक	(विसर्ग सन्धि)
निर्विवाद	निः + विवाद	(विसर्ग सन्धि)
कालान्तर	काल + अन्तर	(स्वर सन्धि)
भावात्मक	भाव + आत्मक	(स्वर सन्धि)
मदान्ध	मद + अन्ध	(स्वर सन्धि)
यज्ञानुष्ठान	यज्ञ + अनुष्ठान	(स्वर सन्धि)
वृत्रासुर	वृत्र + असुर	(स्वर सन्धि)
अत्युच्च	अति + उच्च	(स्वर सन्धि)
उद्गम	उत् + गम	(व्यंजन सन्धि)
नयनाभिराम	ने + अन + अभिराम	(स्वर सन्धि)
अत्याचार	अति + आचार	(स्वर सन्धि)
शरणागत	(शरण + आगत)	(स्वर सन्धि)
हतोत्साहित	हत + उत्साहित	(स्वर सन्धि)